E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(4): 236-239
Received: 22-08-2021
Accepted: 25-09-2021

ममता कुमारी सिन्हा
शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा,
बिहार, भारत

Corresponding Author:
ममता कुमारी सिन्हा
शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा,
बिहार, भारत

कार्यशील महिलाओं के पारिवारिक समायोजना का अध्ययन

ममता कुमारी सिन्हा

सारांश
इस शोध पत्र के माध्यम से कार्यशील महिलाओं के पारिवारिक समायोजन, उनकी दोहरी भूमिका का निर्वहन व उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया गया हैं। कार्यरत महिलाएँ इतनी कठिनाइयों से जूझने के बाद भी अपने कार्य व परिवार के बीच सामंजस्य बैठाने में सक्षम पाई गयी। अतः यह कहा जा सकता है कि आज के इस नारी सशक्तिकरण के दौर में महिलाये इतनी सक्षम व आत्म निर्भर बन गई हैं कि वे प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वो घर परिवार हो य उनका कार्यक्षेत्र अपना परचम फहरा रही है।

कूटशब्द: कार्यशील महिलाओं, पारिवारिक समायोजना, नारी सशक्तिकरण

प्रस्तावना
भारतीय समाज में विभिन्न कालों में स्त्रिय प्रारम्भ से ही पुरूषों के आधीन रही है। चाहें वे शिक्षित हो य अशिक्षित। भारतीय अर्थव्यवस्था जो कि पूर्व में पूर्णतः कृषि व लघु-उघोगो व कुटिर उद्योगों पर आधारित थी अब बड़े उद्योगों व औद्योगिकी के लिए तैयार होने लगी। आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण, विज्ञान तथा तकनीकि शिक्षा का प्रचार व प्रसार आदि की प्रक्रियाओं ने परम्परागत भारत को परिवर्तित कर दिया जिसके फलस्वरूप जातिप्रथा, विवाह, खानपान, पर प्रतिबन्ध, पर्दा प्रथा आदि के कठोर नियमों में कमी आने लगी है। साथ ही इन संस्थाओ के स्वरूप व आर्देशों में भी परिवर्तन आने लगे जिसके परिणामस्वरूप भारतीय महिलाओं के परम्परागत मूल्यों, प्रस्थिति व भूमिकाओं में भी परिवर्तन दिखने लगे किन्तु पूर्णतः नही।

आज के आधुनिक परिवेष की बात करें आज भी लोगो की विचारधारा स्त्रियों के प्रति पूर्णतः बदली नही है। वे आज भी स्त्रियों को उनके परम्परागत रूप में ही देखना पंसद करते है कि स्त्री पत्नी धर्म का निर्वहन करे, एक सहायक के रूप में अपने पति के कार्यों में हाथ बटाँए बच्चों का लालन-पालन करें एक सुग्रहणी बनकर घर-बार सम्भाले व उसकी देखभाल करें।

महानगरों में जहाँ सेवारत विवाहित महिलाओं की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है साथ ही उनके पारीवारिक व सामाजिक समायोजन में भी उतनी ही कठिनाइयाँ उत्पन्न हो रही हैं। यही कारण है कि इस उभरती हुई सामाजिक समस्या ने कई समाजशास्त्रियों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है।

शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण महिलाओं की स्थिति बेहतर हुई है। इनकी सामाजिक व आर्थिक प्रस्थिति में परिवर्तन आये है। परिणामतः जीवन के विभिन्न पक्षो से सम्बंधित समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण तथा व्यवहार में भी परिवर्तन आये है। गाँधी जी ने कहा था कि किसी भी देश की प्रगति का अंदाजा उस देश या समाज की महिलाओं की प्रगति से लगाया जा सकता है।

आज के बदलते हुए भारतीय समाज के परिदृश्य व स्त्रियों की भूमिका व महत्व के बारे में नीरा देसाई लिखती है कि अब नारी को ना तो बच्चा जनने की मशीन और ना ही घर की दासी ही माना जा सकता है। आज की स्त्री ने अपनी जागरूकता व बौद्धिक कुशलता के कारण एक नई सामाजिक पहचान व महत्ता प्राप्त कर ली है।

कामकाजी महिलाओं के परिवारों में स्त्री एवं पुरूष के सामाजिक, आर्थिक व पारीवारिक उत्तरदायित्वों एवं भूमिकाओं में परिवर्तन आया है। जिसके कारण आज हमारे भारतीय समाज में पारिवारिक संतुलन स्थापित करने की समस्या विकराल होती जा रही हैं। कामकाजी महिलाओं को आज दोहरी भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ रहा है। एक ओर पत्नी गृहणी, व माँ की भूमिका तो दूसर और नौकरी व घर दोनो की दोहरी मागों व तनावों के कारण उन्हें अपने वैवाहिक जीवन में समझौते के संकट का सामाना करना पड़ सकता है।

इस शोध पत्र के अंतर्गत यह खोजने का प्रयास किया जायेगा कि कामकाजी महिलाओं के जीवन में एक नई भूमिका के निर्वहन के फलस्वरूप जो परिवर्तन आते हैं इसके बावजूद भी वें अपने पारीवारिक जीवन में सामाजस्य लाने तथा उसे बनाए रखने में कितनी सफल हुई हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थिनी ने अपने अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया है की कार्यरत महिलाओं का पारिवारिक समायोजन है कि नही इस शोध पत्र के माध्यम से कार्यरत महिलाओं के पारीवारिक समायोजन, उनकी दोहरी भूमिका का निर्वहन व उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया जायेगा।

महिलाओं के कामकाजी होने से उनकी पारम्परिक पारीवारिक व सामाजिक प्रस्थितिव व भूमिका में परिवर्तन आया है आज वे शिक्षित होकर स्वावलम्बी बनने लगी हैं। साथ ही वे परिवार को आर्थिक सहयोग प्रदान करने हेतु धनोपार्जन करने लगी हैं। जिससे उनके भीतर आत्म विश्वास व उत्साह जाग्रत होने लगा है। किन्तु इतना सब होने पर भी महिलाओं को अपने काम-काज व पारीवारिक दायित्वों के बीच समायोजना करना पड़ता है। इन नई-नई चुनौतियों व संभावनाओं का प्रभाव स्त्री के व्यक्तिगत जीवन में क्या और कैसे पड़ रहा है इसका अध्ययन हम इन शोध पत्र के माध्यम से करेंगे।

नीरा देसाई ने अपनी पुस्तक "स्त्री बोध एण्ड सोराल प्रोग्रेस इन इंड़िया में यह बताया है कि पुरूषों के साथ ही साथ अब भारतीय महिलाओं भी यह महसूस करने लगी है कि नारी के जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य केवल पति के प्रति कर्तव्यनिष्ट रहने बच्चों को जन्म देने और गृहस्थी संभालने तक ही सीमित नही है किन्तु नारी जीवन का उददेश्य इससे कही अधिक ऊँचा व गम्भीर है।

रास न अपने अध्ययन "दि हिन्दु फैमिली" इन इट्स अर्बन सेटिंग में यह स्पष्ट किया है कि निःसंदेह इतनी संख्या में विवाहित हिन्दु मध्यम वर्गीय महिलाओं का बिना विरोध के नौकरी पाने का मुख्य कारण वर्ग की आर्थिक समस्या को समझने लगे हैं।

भण्डारी माला ने महिलाओं की दोहरी भूमिका वर्तमान जीवन की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। बहुत से अध्ययनो द्वारा यह ज्ञात होता है कि स्त्री की दोहरी भूमिका (घर परिवार व ऑफिस का कार्यरत भार) के कारण भूमिका संघर्ष व तनाव उत्पन्न होता है।

नीरा देसाई- कामकाजी महिलाएँ पारीवारिक तनावों से दरू रहने के लिए कार्यरत है लेकिन जब वे पारीवारिक उत्तरदायित्वों को ठीक ढ़ग से नही निभा पाती है, कार्य के घण्टे अधिक होने पर अपने पति व बच्चो की देखभाल ठीक से नही कर पाती यद्यपि उनके प्रेम व स्नेह में कोई कमी नही होती है। इस स्थिति में पति-पत्नी व परिवार के मध्य तनाव की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. कार्यरत महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. कामकाजी महिलाओं के पारीवारिक समायोजना में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना।
3. कार्यरत महिलाओं की दोहरी भूमिका का अध्ययन करना।
4. कार्यरत महिलाओं के बच्चों के पालन- पोषण में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना।
5. कार्यरत महिलाओं को परिवार से मिलने वाले सहयोंग को ज्ञात करना।

इस प्रपत्र को पूर्ण करने हेतु तथ्यों के संकलन में काफी कठिनाइयों का सामाना करना पड़ा तथ्यों का संकलन अत्यंत जटिल व कष्टकारी रहा।इस अध्ययन के अंतर्गत चयनित महिलाओं की सामाजिक पृष्ठभूमि का तथ्य परक विवरण प्रस्तुत किया गया है। कार्यरत शिक्षिकाओं के संबंध में साक्षात्कार अनुसूचि के माध्यम से उनकी, आर्थिक स्थिति, धार्मिक स्थिति, धर्म, जाति, शिक्षा, परिवार का स्वरूप, बच्चे आदि का विष्लेशण किया गया है।

तालिका संख्या 01: सामाजिक स्थिति (जातिः-)

क्रम सं.	जाति समूह	कुल सं.	प्रतिशत
1.	सामान्य जाति	28	56 प्रतिशत
2.	अन्य पिछड़ा वर्ग	12	24 प्रतिशत
3.	अनुसूचित जाति	10	20 प्रतिशत
कुल योग		50	100 प्रतिशत

सारणी संख्या 01 के विश्लेषण के उपरान्त यह बात स्पष्ट हुई कि अधिकांश उत्तरदात्रियाँ सामान्य जाति 28 (56 प्रतिशत) की थी, दूसरे स्थान पर अनुसूचित जाति 12(24 प्रतिशत) तथा तीसरे स्थान पर 10 (20 प्रतिशत) अन्य पिछड़े वर्ग की शिक्षिकाएँ पाई गई। जो कि संख्या के दृश्टिकोण से न्यूनतम थी।

तालिका संख्या 02: आर्थिक स्थिति

क्रम सं.	आय का स्वरूप	कुल सं.	प्रतिशत
1.	40-50 हजार	28	56 प्रतिशत
2.	46-50 हजार	19	38 प्रतिशत
3.	51-55 हजार	03	6 प्रतिशत
कुल योग		50	100 प्रतिशत

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने पर यह बात स्पष्ट होती है कि सर्वाधिक महिलाएँ 28 (56 प्रतिशत) 40-45 हजार आय समूह से संबंधित हैं। दूसरे स्थान पर 19 (38 प्रतिशत) महिलाएँ 46-50 हजार आय समूह से संबंधित हैं। तीसरे स्थान पर 3 (6 प्रतिशत) शिक्षिकाएँ 51-55 हजार आय समूह से संबंधित हैं।

तालिका संख्या 03: (कार्यरत महिलाओं की दोहरी भूमिका से संबंधित तालिका)

क्रम सं.	जानकारी का स्वरूप	उत्तरदात्रियों की कुल संख्या	प्रतिशत
1.	पूर्णतः सहमत	26	52 प्रतिशत
2.	सहमत	19	38 प्रतिशत
3.	अनिश्चित	02	04 प्रतिशत
कुल योग		50	100 प्रतिशत

उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने पर यह बात स्पष्ट होती है कि 96 प्रतिशत महिलाएँ यह बात उन्हे स्वीकार करती है कि कार्यरत होने के कारण उन्हे परिवार व अपने काम के बीच संतुलन स्थापित करनक में दोहरी भूमिका का निर्वहन करती है।

निष्कर्ष

अत: यह कहा जा सकता है कि कार्यशील महिलाएँ समाज में अपना योगदान प्रदान कर रही है। वे अपने परिवार खुशियों व आर्थिक स्थिति को और अधिक मजबूत बनाने में अपना सहयोग प्रदान कर रही है। आज समाज में उन्की अलग पहचान है। कार्यरत महिलाओं को अपने पारीवारिक समायोजन में कुछ तनावो टकरावों व कठिनाइयों का भी सामाना करना पड़ता है किन्तु ये स्थितियाँ सदैव स्थाई नही होती है कामकाजी महिलाये अपने कार्य व परिवार के बीच सामांजस्य बैठाने व मधुर संबंध बनाने में भी अग्रणी हैं। वे अपने बच्चों को उपयुक्त समया दे पाती हैं व उनके प्रति अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन भी कर पाती हैं। अधिकांश महिलाओं का मानना है कि वेस्वेच्छ से अपना वेतन खर्च कर पाती है व पारीवारिक मुद्दो पर खुलकर बात करती व उनकी भी राय लेना महत्वपूर्ण माना जाता है। साथ ही उन्हे परिवार के वरिष्ठ सदस्यों का सहयोग पूर्ण स्नेह व सहानुभूति भी प्राप्त होती हैं।

संदर्भ

1. देसाई नीरा - आधुनिक भारत में महिलाएँ
2. Kapadia K.M — Marriage and family in India (1996)

3. Desaie Neera — Woman in Modern India Bombay (1957)
4. कपूर प्रमिला - भारत में कामकाजी महिलाएँ
5. अहुजा राम - भारतीय सामाजिक व्यवस्था
6. कुमार राज - नारी के बदलते आयाम
7. गुप्ता सेन पद्मिनी - भारत में कामकाजी महिलाएँ